RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 1, Year : 4
Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 40 - 44
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

''जैविक खेती''
समाज के लिए आवश्यकता एवं महत्व

शेफाली शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर,
समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, लक्सर (हरिद्वार)

Received : 15/03/2017 *1st BPR* : 16/03/2017 *2nd BPR* : 20/03/2017 *Accepted* : 24/03/2017

ABSTRACT

जैविक खेती कृषि में अपनायी जाने वाली वह विधि है जिसके अन्तर्गत स्वास्थ्य तथा पर्यायवरण के लिए घातक रासायनिक खादों एवं कीटनाशकों के बजाय प्राकृतिक तत्त्वों से तैयार खादों एवं कीटनाशकों का प्रयोग खेती के लिए किया जाता है। जैविक खेती कोई नयी अवधरणा नही है, अपितु प्राचीन काल से ही इसका प्रयोग खेती में इसका प्रयोग होता रहा है, किन्तु पिछले कुछ दशक में बढ़ती जनसंख्या, भूमि की उर्वरता में कमी आने के कारण खेती में रासायनिक तत्त्वों के प्रयोग को बढ़ावा मिला। खेती में रासायनिक तत्त्वों के प्रयोग के कारण भूमि की उर्वरता कम होती जा रही है, पर्यायवरण प्रदूषित होता जा रहा है, तथा ऐसी खेती से उत्पन्न फसल के प्रयोग से लोगो के स्वास्थ्य को गम्भीर खतरा होता जा रहा है, अतः यह आवश्यक हो गया है कि रासायनिक तत्त्वों के बजाय खेती में प्राकृतिक तत्त्वों का प्रयोग किया जाए तथा जैविक खेती को बढ़ावा देने का मुख्य लक्ष्य लोगो के स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के साथ ही कम लागत में अध्कि और गुणवत्तापूर्ण उत्पादन को प्रोत्साहित करना है। अतः जैविक खेती समाज के लिए आवश्यक होने के साथ ही महत्त्वपूर्ण भी है।

संकेत शब्द : चक्रिकरण, वाष्पीकरण, अवरोधकता, उर्वराशक्ति, जैविक उत्पाद।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या के अनुपात में कृषि क्षेत्र में भी उत्पादन बढ़ाना आवश्यक होने के कारण अधिक उत्पादन हेतु खेती में रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशकों का प्रयोग व्यापक पैमाने पर होने के कारण भूमि, जल, वायु, वातावरण प्रदूषित होने के साथ ही ऐसी कृषि से उत्पन्न खाद्य पदार्थ भी जहरीलें हो रहे है। इन सभी के दुष्प्रभावों से बचने के लिए विगत कुछ वर्षों से जैविक खेती अपनाने पर जोर दिया जा रहा है।

जैविक खेती, कृषि की वह प्रणाली है जिसके अन्तर्गत कृषि में रासायनिक उर्वरक तथा कीटनाशकों के बजाय, हरी खाद्य, मुर्गी की खाद, गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट आदि का प्रयोग किया जाता है ताकि भूमि की उर्वरक क्षमता बनी रहे। जैविक खेती के अन्तर्गत जैविक दवाईयों तथा जैविक खादों का उपयोग करके पर्याप्त उत्पादन किया जा सकता है तथा अधिक से अधिक क्षेत्रों में जैविक खेती अपनाने से वातावरण, भूमि, जल शुद्ध रहेगा, जिससे धरती में सभी प्राणी स्वस्थ रहेंगे।

खेती में जैविक विधि का प्रयोग करके प्राप्त वस्तुओं के उपयोग से शरीर स्वस्थ रहता है, तथा बीमारियों का खतरा कम रहता है। जैविक खेती भूमि की उर्वरक क्षमता को बनाये रखने के साथ ही कृषि की उत्पादन क्षमता को भी बढ़ाने में सहायक होता है। रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों की तुलना में जैविक खेती से प्राप्त उत्पाद स्वास्थ्य के लिए अधिक लाभप्रद होते है तथा इस विधि से उत्पादन करने में लागत कम लगती है, जिससे कृषकों भी अधिक आय प्राप्त होती है। भूमि की उपजाऊ क्षमता को बनाये रखने हेतु तथा मानव जीवन के स्वास्थ्य को सुरक्षित बनाए रखने के साथ ही जैविक खेती वातावरण को प्रदूषित होने से बचाती है। जैविक खेती प्रकृति के नैसर्गिक संसाधनों एवं मानवीय पर्यायवरण को प्रदूषित किए बिना ही मानव समाज को शुद्ध खाद्य सामग्री उपलब्ध कराकर समाज को तथा कृषकों की आय में वृद्धि में सहायक बनकर कृषकों को भी खुशहाली में जैविक खेती के प्रयोग द्वारा सतत् ग्रामीण विकास संभव है।

जैविक कृषि में केवल एक ही विधि का प्रयोग नहीं किया जाता है बल्कि इसमें अलग–अलग विधियों को मिल कर प्रयोग में लाया जाता है जिससे अधिक लाभ प्राप्त हो सके। जैसे हरी खाद को खेती में कुछ और सावधनियों के साथ प्रयोग करने से अधिक लाभ मिलता है जबकि इन्हें अकेले प्रयोग करने से अधिक लाभ नहीं मिलता है।

मध्य प्रदेश में सर्वप्रथम 2001–02 में जैविक खेती का आन्दोलन चलाकर प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकासखण्ड के एक गांव में

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 40-44 , ISSN 2348 – 3318
शेफाली शुक्ला
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

जैविक खेती आरम्भ की गई और इन गांवो को जैविक गांव का नाम दिया गया । इस प्रकार प्रथम वर्ष में कुल 313 ग्रामों में जैविक खेती आरम्भ हुई।

वर्ष 2002–03 में द्वितीय वर्ष में प्रत्येक जिले के विकासखण्ड के दो–दो गांव, वर्ष 2003–04 में 2–2 गांव अर्थात् 1565 ग्रामों में जैविक खेती की गई। वर्ष 2006–07 में पुनः प्रत्येक विकासखण्ड में 5–5 गांव चयन किए गए। इस प्रकार प्रदेश के 3130 ग्रामों में जैविक खेती का कार्यक्रम चलाया जा रहा था। प्रदेश के प्रत्येक जिले में जैविक खेती के प्रचार–प्रसार हेतु झांकी, बैनर्स, पोस्टर्स, साहित्य एवं विशेषज्ञों द्वारा जैविक खेती पर उद्‌बोधन आदि के माध्यम से प्रचार–प्रसार करके किसानों में जन–जागृति फैलाई जा रही है।

वर्तमान समय में सम्पूर्ण भारत में लोगो में जैविक खेती के प्रति रूझान बढ़ा है। इसी कारण जैविक विधि से प्राप्त वस्तुओं तथा पदार्थों की मांग भी विश्व भर में तेजी से बढ़ी है। लोग रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों के प्रयोग से प्राप्त खाद्य उत्पादों के दुष्प्रभावों से परिचित हो रहे है, वे यह जानते है कि ऐसी कृषि से प्राप्त उत्पाद उनकी सेहत को खराब करके कई बीमारियों को उत्पन्न कर सकती है, साथ ही ऐसे उत्पादों में न्यूट्रीशन की भी कमी होती है। इसके विपरीत जैविक खेती से प्राप्त उत्पाद स्वास्थ्य के लिए अनुकूल होते है, पोषण से भरपूर होते है। जैविक खाद्य उत्पादों की उपयोगिता को जानने के कारण ही लोग अधिक कीमत चुकाकर भी इन्हें उपयोग में लाना ज्यादा बेहतर समझते है क्योंकि ये उनके लिए स्वास्थ्य वर्धक होते है।

भारत सरकार की ओर से जैविक खेती अपनाने को लगातार प्रोत्साहित किया जा रहा है। जैव उत्पादों के महत्व को समझते हुए कृषि मन्त्रालय जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय जैविक खेती परियोजना, राष्ट्रीय बागबानी मिशन तथा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना संचालित कर रहा हैं। राष्ट्रीय बागबानी मिशन और पूर्वोत्तर के लिए प्रौद्योगिकी मिशन के तहत जैविक बागबानी खेती के लिए अधिकतम 10,000 रुपये प्रति हेक्टेयर लागत की 50 फीसदी की दर पर; प्रति लाभार्थी 4 हेक्टेयर तक की सहायता दी जाती है।

केन्द्र सरकार के प्रयासों के अलावा केरल, आन्ध्र प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश, नागालैण्ड, मिजोरम पहले ही जैविक खेती को बढ़ावा देने की नीतियां तैयार कर चुके है। उत्तराखण्ड, सिक्किम, नागालैण्ड ने भविष्य में पूरी तरह से जैविक खेती को अपनाने का संकल्प लिया है। विभिन्न स्थानों पर जैविक उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ ही किसानों को पम्पलेट एवं अन्य प्रचार सामग्री की मदद से जैविक खेती के फायदों से जागरुक कराया जा रहा है।

भारत में जैविक खेती के अन्तर्गत उपयोग की गई भूमि का राज्यवार विवरण 2013–14 के अनुसार तालिका 01 में प्रस्तुत किया गया है ।

तालिका 01

क्र.सं.	राज्य का नाम	जैविक क्षेत्र (हे0में)
1.	आन्ध्र प्रदेश	12325.03
2.	अरूणाचल प्रदेश	71.49
3.	आसाम	2828.26
4.	बिहार	180.60
5.	छत्तीसगढ़	4113.25
6.	गुजरात	12853.94
7.	हरियाणा	3835.78
8.	सिक्किम	60843.51
9.	राजस्थान	66020.35
10.	उत्तर प्रदेश	44670.10
11.	उत्तराखण्ड	24739.46
12.	तमिलनाडु	3640.07
13.	मध्य प्रदेश	232887.36
14.	महाराष्ट्र	85536.66

स्त्रोत : APEDA (2013&14)

जैविक खेती किसान एवं पर्यायवरण दोनो के लिए लाभकारी है। किसान की खेती की लागत रासायनिक खेती की तुलना में करीब 80% कम हो जाती है तथा जैविक खेती से उत्पादों की गुणवत्ता रासायनिक खेती की तुलना में कई गुना बेहतर होते है एवं ऊँचें दाम पर बाजार में बिकते है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी जैविक उत्पाद सर्वश्रेष्ठ होते है एवं उनके प्रयोग से कई प्रकार के रोगों

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 40-44 , ISSN 2348 – 3318
शेफाली शुक्ला
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

से बचा जा सकता है। जैविक उत्पादो की कीमत रासायनिक उत्पादों से कई गुना अधिक होती है जिससे किसानों की औसत आय में वृद्धि होती है।

जैविक खेती एवं रासायनिक खेती की तुलनात्मक उत्पादकता से सम्बन्धित निम्न आंकड़ें दर्शाते है कि जैविक खेती से फसलों की उत्पादकता रासायनिक खेती की तुलना में 20 से 25 प्रतिशत तग बढ़ जाती है।

तालिका 02

फसल	जैविक खेती से उत्पादकता	रासायनिक खेती से उत्पादकता	जैविक खेती, खेती की अधिक उत्पादकता का प्रतिशत
गन्ना (टन में)	942	817	15.26
चावल (क्विंटल में)	88	78	12.82
मूंगफली (क्विंटल में)	18	14	28.57
सोयाबीन (क्विंटल में)	74	51	45.09
गेहूँ (क्विंटल में)	45	35	28.57
फल एवं सब्जियाँ (क्विंटल में)	15	14	7.14

जैविक खेती वर्तमान समय की आवश्यकता एवं मांग है, अतः सभी नागरिकों को जैविक खेती अपनाने तथा जैविक उत्पादों के प्रयोग का संकल्प लेना होगा। रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों से मुक्त प्राकृतिक खाद व हानिरहित कीटनाशकों को अपनाकर ही स्वस्थ समाज तथा समृद्ध किसान का स्वप्न फलीभूत हो सकता है। जैविक विधि कृषि में अपनाकर कम लागत में उत्तम पैदावार करके जहरीले कीटनाशकों के प्रभाव से समाज को बचाना आवश्यक है। कीटनाशको के इस्तेमाल से उत्पन्न खाद्य पदार्थ कैंसर जैसी घातक बीमारी का भी कारण है।

वैज्ञानिकों ने अपने शोध के माध्यम से स्पष्ट किया है कि देश की 54 प्रतिशत उपजाऊ जमीन की मिट्टी अपनी उर्वरक क्षमता खो चुकी है। यूरिया और डी0ए0पी0 जैसी खादों का अंसतुलित उपयोग प्राकृतिक तत्वों को खत्म करता जा रहा है। किसानों द्वारा इस्तेमाल किए गए नाइट्रोजन से पौधे मात्रा 30 फीसदी यूरिया का उपयोग करते है। फसल की आवश्यकता से अधिक उपयोग किया गया नाइट्रोजन वाष्पीकरण के जरिए वातावरण में पहुँच जाता है। कुछ यूरिया जमीन में रिस जाता है तथा नाइट्रोजन से मिलकर नाइट्रोसोमाइन बनाता है जिससे भूजल दूषित होता है। ऐसा पानी पीने से रसौली, रक्त में लाल कणिकाओं का कम बनना, कैंसर जैसी बीमारियाँ होती है। इसके अतिरिक्त अधिक मात्रा में यूरिया का उपयोग फसल के रसीलेपन को बढ़ा देता है जिससे पौधे बीमारियों और कीट संक्रमण का शिकार हो सकते है, ऐसे पौधे से उत्पन्न खाद्य पदार्थ सेहत पर नकारात्मक प्रभाव डालते है। इसके विपरीत जैविक खाद्य का इस्तेमाल जहां भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है, वही गुणवत्तायुक्त फसल प्राप्त होती है। इस खाद्य को किसान अपने स्तर पर भी तैयार करके खेती की कुल उत्पादन लागत में कमी लाकर भरपूर लाभ प्राप्त कर सकते है।

किसानों को जैविक खेती के प्रति जागरुक करने हेतु सब्जी उत्कृष्टता केन्द्र में जैविक खेती परियोजना के तहत पाँच प्रकार की खाद तैयार की जा रही है। जिसका उद्देश्य भूमि स्वास्थ्य में सुधार, खेती की उत्पादन लागत में कमी लाना, गुणवत्तायुक्त स्वस्थ्य खाद्य, सब्जी, फल उत्पादन करके किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधर लाना है। केन्द्र में जैविक खेती परियोजना के तहत नादेन कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट या केंचुआ खाद, सी.पी.पी. (गाय के गोबर की खाद्य) तथा तरल खाद्य तैयार की जाती है।

विशेषज्ञों के अनुसार 75 प्रतिशत मुख्य पोषक तत्त्वों नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश की पूर्ति किसान द्वारा चार जैविक खाद्यों के माध्यम से बुवाई करने के पहले तथा शेष 25 प्रतिशत पूर्ति जैविक तरल पदार्थ / सी.पी.पी. / केंचुआ धैवन के माध्यम से करनी चाहिए।

जैविक खाद कई प्रकार के लाभ देती है, जैसे जैविक खाद का प्रयोग करने से भूमि की उर्वरा शक्ति में सुधार होने के साथ ही जैविक मिश्रण पोषण तत्त्वों की घुलनशीलता को बढ़ाकर पौधे को उपलब्ध कराता है। जैविक खाद भूमि में रायासनिक एवं मेटोबोलिक क्रियाओं से उत्पन्न जहरीलेपन को कम करता है, भूमि में जैविक कार्बन की मात्रा को बढ़ाकर पौधे की बढ़त में सहायक होता है, भूमि के पी.एच. को संतुलित करने में मदद करता है, भूमि में उपलब्ध सूक्ष्म पोषक तत्त्वों की उपलब्ध्ता को बढ़ाता है, बीज जमाव के बाद खेत में फसल को रोग कीटो के प्रति अवरोधकता पैदा करता है।

जैविक खेती के अन्तर्गत पोषक जैव वैज्ञानिक चक्र, जैव विविध्ता, जैव रसायन क्रियाकलाप से सम्बन्धित कृषि स्थिति की प्रणाली स्वास्थ्य का संवर्धन करती है। इसमें रासायनिक उर्वरक के स्थान पर माइक्रोबायल पोषक जैव शैवाल, फंगी बैक्टीरिया का उपयोग किया जाता है। जैविक खेती में मवेशी के गोबर, जानवरो के अपशिष्ट, ग्राम और शहरी कम्पोस्ट, फसलों के अपशिष्ट और हरा खाद शामिल है। ये सभी अपशिष्ट मृदा की उर्वरता और उत्पादकता बढ़ाने में लाभदायक है। भारत सरकार के सोईल कन्जर्वेशन सोसायटी के पशुपालन से अत्योदय पैनल के राष्ट्रीय अध्यक्ष और दिल्ली में एक बड़ी गौशाला महर्षि दयानन्द गो

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 40-44 , ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

संर्वधन केन्द्र के संचालक सुबोध कुमार कहते है कि गाय और जैविक खेती का अंर्तसम्बन्ध आज पूरी दुनिया ने स्वीकार किया है। वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि गोबर और गौ–मूत्र मिट्टी के लिए जरूरी नाइट्रोजन और कार्बन के अच्छे स्त्रोत है।

भारत में विगत कुछ वर्षो में जैविक खेती के लिए उपयोग की गई कृषि भूमि का विवरण निम्न तालिका में दिया गया है :–

तालिक सं0 – 03

क्र0 सं0	वर्ष	जैविक कृषि हेतु क्षेत्रापफल का विवरण (हेक्टेयर में)
1	2003–04	42,000
2	2004–05	76,000
3	2005–06	1,73,000
4	2006–07	5,38,000
5	2007–08	8,65,000
6	2008–09	12,07,000
7	2009–10	10,85,648

स्त्राोत – नेशनल सेंटर ऑफ आर्गेनिक फार्मिंग, गाजियाबाद

जैविक उत्पादों के निर्यात में वर्तमान समय में भारत एक अग्रणी देश है। भारत ऑर्गेनिक चाय निर्यात करने वाला एक प्रमुख देश है। साथ ही भारत में ऑर्गेनिक विधि से उत्पादित चावलों, सब्जियों, कॉफी, गेहूँ, दालों, फलों और मसालों की भी मांग विदेशों में बढ़ी है। फलों में केले, आम, संतरा, जैविक खेती से उगाये जाने वाले फलों में से सबसे ज्यादा पसन्द किए जाने वाले फल है।

तालिका सं0–02 में भारत के प्रमुख राज्यों में जैविक खेती के माध्यम से उगायी जाने वाली प्रमुख फसलों का विवरण दिया जा रहा है –

तालिका सं0–02

विभिन्न राज्यों में जैविक विधि के प्रयोग से उगायी जाने वाली फसलों का विवरण

राज्य	उत्पादन
अरूणाचल प्रदेश	दाले, चाय, कॉफी
आन्ध्र प्रदेश	रूई, दालें, फल, सब्जियाँ
छत्तीसगढ़	चावल, गेहूँ, सब्जियाँ
आसाम	चाय, काफी, फल, सब्जियाँ
दिल्ली	गेहूँ, सब्जियाँ
गोआ	पफल, सब्जियाँ
गुजरात	रूई, दालें, सब्जियाँ
हरियाणा	बासमती चावल, गेहँ, सब्जियाँ
हिमाचल प्रदेश	गेहूँ, फल, सब्जियाँ
जम्मू तथा कश्मीर	मसाले, फल, सब्जियाँ

स्त्रोत – ICAR

उपरोक्त विश्लेषणों से स्पष्ट है कि वर्तमान में जैविक खेती के प्रति किसानों तथा जनमानस में चेतना का संचार हुआ है, जिसके कारण विश्वभर में जैविक खेती के अन्तर्गत उपयोग में लाई जाने भूमि तथा विभिन्न उत्पादों की मात्रा में बढ़ोतरी हुई है। समाज में सभी प्राणियों की सेहत तथा भूमि की उर्वरता को सुरक्षित बनाये रखने एवं वातावरण को भी सुरक्षित बनाये रखने हेतु जैविक खेती को और बढ़ावा देना आवश्यक है। जैविक उत्पादों के निर्यात में अग्रणी रहकर भारत जैविक उत्पादों का एक प्रमुख निर्यातक देश भी बन सकता है।

जैविक खेती का प्रमुख उद्देश्य मिट्टी की उर्वरक क्षमा को नष्ट होने से बचाना तथा फसलों को ऐसे पोषक तत्त्व उपलब्ध कराना है जो मिट्टी और फसलों में अघुलनशील होने के साथ ही सूक्ष्म जीवों पर असरदायक हो। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए नितान्त आवश्यक है, कि प्राकृतिक संसाधन प्रदूषित न हो, शुद्ध वातावरण रहे एवं पौष्टिक आहार मिलता रहे,

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 40-44 , ISSN 2348 – 3318
शेफाली शुक्ला
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

इसके हेतु हमें जैविक कृषि विधियों को अपनाना होगा जो कि हमारे नैसर्गिक संसाधनों एवं मानवीय पर्यायवरण को प्रदूषित किए बगैर समस्त जनमानस को खाद सामग्री उपलब्ध करा सकेगी तथा मानव जीवन को खुशहाल जीने की राह दिखा सकेगी।

सन्दर्भ सूची –

- किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, मध्य प्रदेश (भारत सरकार कृषि मंत्रालय के सहयोग से)
- जैविक खेती से बढ़ता उत्पादन, डॉ0 सरिता, कुरुक्षेत्र, सितम्बर 2015
- जैविक खेती का खेत, रविशंकर, भारतीय पक्ष
- मध्य प्रदेश सरकार, राज्य सेवा वितरण, गेटवे www.mp.go.in.
- www.icar.org.in
- आर्गेनिक एग्रीकल्चर, नेशनल प्रोजेक्ट ऑन आर्गेनिक पार्मिंग, ए.के.यादव।
- जैविक खेती की ओर बढ़ रहे किसानों के कदम, सुशील कुमार शर्मा।